Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **" गुर्जर-प्रतिहार वंश।(Note-3)"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

गुर्जर-प्रतिहार वंश ।(Note-3)

महीपल-प्रथम (912 ई०-944 ई०)

महेंद्रपाल के पश्चात् प्रतिहार वंश के उत्तराधिकारी का इतिहास वादग्रस्त है। उसकी दो पत्नियां थी जिससे 2 पुत्र भोज द्वितीय तथा महीपाल थे। संभवतः महेंद्रपाल के बाद कुछ समय के लिए भोज द्वितीय ने शासन किया। परंतु शीघ्र ही उसका सौतेला भाई महीपाल शासक बना। गुर्जरों का अंतिम प्रभावशाली राजा था । उसका शासनकाल शांति एवं समृद्धि का काल रहा। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार भी किया ।915 ई० से 918 ई० के बीच राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय ने कन्नौज को खूब रौंदा। महीपाल पराजित हुआ तथा जान बचाकर भागा।परंतु इंद्र तृतीय कन्नौज में अधिक समय तक नहीं ठहर सका तथा उसे शीघ्र ही दक्षिण लौटना पड़ा ।महीपाल ने चंदेलों की सहायता लेकर कन्नौज पर पुनः नियंत्रण कायम कर लिया। लेकिन राष्ट्रकूट भारी पड़े और गुर्जरों की प्रतिष्ठा विनष्ट कर दी । यद्यपि महीपाल ने दोआब, बनारस,

ग्वालियर और काठियावाड़ पर भी अधिकार कर लिया, लेकिन गुर्जरों का पतन तीव्रता से शरू हो गया।

महेन्द्रपाल द्वितीय, देवपाल, विनायक, पालदेव, विजयपाल राजाओं की कड़ी के बड़े कमजोर शासक सिद्ध हुए, इसलिए महीपाल प्रथम तक ही गुर्जर प्रतिहारों का शासन प्रतिहारों में व्याख्यापित किया जाता है । चालुक्यों, चंदेलों, कलचुरियों, परमारों, गुहिलों और चौहानों ने गुर्जरों के राज्य के विभिन्न क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया। राजपाल जो विजयपाल का पुत्र था ने 1018 ई० तक कन्नौज पर शासन किया । वह इस वंश का अंतिम कमजोर शासक था । जब महमूद गजनवी के आक्रमण कन्नौज पर हुए तो वह उसने महमूद गजनबी के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया तथा कन्नौज पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। बाद में राजपाल अपना शरीर लेकर भाग खड़ा हुआ तथा महमूद ने कन्नौज को खूब लूटा ।उसके कायरपन को देखते चंदेल शासक गंडदेव ने उसकी हत्या कर दी । यशपाल जो राजपाल का पुत्र था इस वंश का अंतिम शासक था । 1080 ई० से 1085 ई० के बीच कन्नौज गहढवालों के हाथ मे चला

गया। इल्तुतमिश की कन्नौज विजय के पूर्व तक गहढवाल ही कन्नौज को अपने अधिकार में लिए हुए था ।

उत्तर भारत के इतिहास में प्रतिहारों के शासन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । हर्ष की मृत्यु के बाद प्रतिहारों ने प्रथम बार उत्तरी भारत में एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की तथा लगभग डेढ़ सौ वर्षो तक वे इस साम्राज्य के अधिष्ठाता बने रहे। उन्होंने अरब आक्रमणकारियों से सफलतापूर्वक देश की रक्षा की। मुसलमान लेखक भी उनकी शक्ति एवं समृद्धि की प्रशंसा करते हैं। वे मातृभूमि के सजग प्रहड़ी थे और इस रूप में उन्होंने अपना प्रतिहार नाम सार्थक कर दिया । कुछ विद्वान हर्ष के स्थान पर प्रतिहार शासक महेंद्रपाल प्रथम को ही हिंदू भारत का अंतिम महान शासक मानते हैं।

References: Internet & Competitive books.